International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 6; November 2018; Page No. 88-90

भारतीय खेल इतिहास : बदलने संदर्भ एवं खेल साहित्य से संबद्ध स्तरीय अध्ययन का अभाव

डॉ0 अजय कुमार यादव
क्रीड़ा अधिकारी, डी0 पी0 विप्र महाविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

प्रस्तावना

आज इतिहास प्रत्येक विषय से संबद्ध होकर उसके विस्तृत फलक का निर्माण कर अंतरराष्ट्रीय आलोक में विषय को नवीनता एवं प्रसिद्धि दे रहा है। डॉ. हीरानंद शास्त्री ने प्रकृति के सामने भारतीयों की तुच्छता एवं असमर्थता बोध को लक्ष्य करते हुए लिखा है।

"प्राचीन भारतीयों ने इतिहास (खेल) के प्रति विशेष ध्यान नहीं दिया। वे अतीत तथा वर्तमान भौतिक जीवन में विशेष रूचि रखते थे।"[1]

भारतीय आध्यात्मिक जीवन ने खेल–इतिहास की सारी परिकल्पना समाप्त कर दी। उसने जीवन के सत्यान्वेषण में अगोचर शक्ति की क्रियाशीलता का परिकल्पन किया। दार्शनिक अवधारणा ने अज्ञात शक्ति को एक कुशल खिलाड़ी माना और यहाँ तक कहा कि यह संसार और कुछ नहीं, उस खिलाड़ी का रंग–बिरंगा खेल है। भारतीयों ने खेल को ऊब मिटाने का आयोजन माना। खेल पर गंभीर ढंग से चिंतन नहीं किया गया। अपेक्षात्मक टिप्पणियों द्वारा खेल का अवमूल्यन किया गया। गंभीर लोगों ने खेल को एक बचकानी हरकत के अतिरिक्त और कुछ नहीं माना। लोगों की यह आम मानसिकता हो गई कि जिसे कोई काम नहीं, वह खेल में अपना समय गंवाता है। चार पैसे कमाने वाले काम पर लोगों की रूचि ज्यादा रही, अतः खेल के प्रति नगण्य भाव एवं उदासीनता ने खेल इतिहास सर्जन को कुण्ठित किया। कुछ काल पश्चात् खेल के साथ कुछ कमाने की अवधारणा का विकास हुआ।

"Work while you work
Play will you play
That is the way
To be happy and gay."[2]

इस मान्यता से भारतीयों की खेल–दृष्टि में एक नया मोड़ आया, एक नया परिवर्तन आया और खेल को निरर्थक समझने की प्रवृत्ति पर अंकुश लगा। आर्थिक विपन्नता से ग्रस्त देश की खेल के प्रति एक नयी सोच ने जन्म लिया। समय का चक्र आगे बढ़ा और एक नया इतिहास रचते हुए खेल जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बना।

खेल इतिहास ऐसी श्रृंखला है, जिसका कहीं भी अंत नहीं दिखाई देता। इतिहास अनेक करवटें लेता है, किन्तु खेल की लतायें पुनः हरीतिमा से भरपूर हो उठती है। आदमी का जीवन धन्य है। वह हार मानना नहीं जानता। खेल का इतिहास भी एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण का इतिहास है। एक सतत् सामाजिक प्रक्रिया इसमें गतिशील दिखाई पड़ती है। आदमी का क्रीड़ा करना, उसकी विवशता है। अतः खेल एक सनातन प्यास है। आदमी के अवतरण से भू–क्षय तक खेल का प्रवाह कभी भी स्थिर नहीं हो सकता।

हिन्दू संस्कृति की संपन्नता खेल के लिए अनुकूल रही है। खेल देश की समृद्धि से घनिष्ठ संबंध रखते हैं। इसीलिए भारत को 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था। जीवन में उल्लास का सौन्दर्य था। जल, थल, मैदान, वन, पर्वत, सर्वत्र बालक निर्द्वन्द्व क्रीड़ा करते थे। मनोरंजन से साधनों की प्रचुरता थी।

भारत में शारीरिक शिक्षा के प्रमुख संस्थान[3]

1. "वाई. एम. सी. ए. कॉलेज ऑफ फिजिकल एजुकेशन, मद्रास हिंदुस्तान का प्रथम शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय नेशनल कौंसिल ऑफ वाई. एम. सी. ए. ऑफ इंडिया, बर्मा एवं सीलोन द्वारा मद्रास नगर के सैदापीठ नामक स्थान में 1920 में स्थापित हुआ। इस महाविद्यालय के संस्थापक श्री एच. सी. बक प्रथम प्राचार्य के रूप में पदस्थ हुए एवं उन्हें खेल का पितामह माना गया।
2. गव्हर्नमेंट कॉलेज ऑफ फिजिकल एजुकेशन, हैदराबाद– 1931
3. गव्हर्नमेंट कॉलेज ऑफ फिजिकल एजुकेशन, कलकत्ता– 1932
4. क्रिश्चियन कॉलेज ऑफ फिजिकल एजुकेशन, हैदराबाद– 1932
5. ट्रेनिंग स्टडी फॉर फिजिकल एजुकेशन, कांदीवली, (बम्बई)– 1938
6. .गव्हर्नमेंट कॉलेज ऑफ फिजिकल एजुकेशन, इलाहबाद– 1945
7. .तिरहुट स्कूल ऑफ फिजिकल एजुकेशन मुजफ्फरपुर(बिहार) इस विद्यालय को इसाई मिशनरी ने स्थापित किया।
8. इंडियन इंस्टीट्यूट फॉर डिप्लोमा इन फिजिकल कल्चर एंड रिक्रिएशन, अमरावती (महाराष्ट्र)– 1947

खेल में आज सब कुछ है

वर्तमान में हर क्षेत्र बड़ी द्रुतगति से आगे बढ़ रहा है। आज विश्व बाजार की चकाचौंध ने मनुष्य को बड़ा तार्किक, चिन्तनशील एवं समझदार बना दिया है। खेल के क्षेत्र में भी नए–नए प्रयोग और प्रशिक्षण हो रहे हैं। खेल अब अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धा का प्रमुख विषय हो चुका है। प्राचीन कुंठित धारणाएँ और खेल के संदर्भ में कटूक्तियाँ आज निरर्थक हो गई हैं। खेल आज एक सम्मानजनक विषय है। भारत में खेलों की समृद्धि, सम्मान और अवसरों की वृद्धि हुई है। उसका आकाश व्यापक हुआ है। किसी समय भारत में खेल के प्रति बड़ी ओछी मानसिकता थी, छोटे बच्चों को खेल के प्रति आकर्षित होते देख उन्हें मना किया जाता था और यह कहा जाता था–

"पढ़ोगे–लिखोगे बनोगे नवाब, खेलोगे–कूदोगे होगे खराब।"[4]

ऐसी संकीर्ण धारणा अब कहीं भी दिखाई नहीं पड़तीं। कभी हमारे देश में खेलों की अहमियत न रही हो, मगर आज की तारीख में खेलों की न सिर्फ अहमियत बढ़ी है, बल्कि खेलों में पद, पैसा और प्रतिष्ठा सब कुछ हासिल हो रही है। लोग पहले कहा करते थे कि हिंदुस्तान में सितारे या तो क्रिकेट स्टार होते हैं या बॉलीवुड के सितारे। वे भी आज मानने को विवश हैं कि अभिनव बिंद्रा, सनिया मिर्ज़ा, बिजेंद्र सिंह, सुशील कुमार, सायना नेहवा, महेश भूपति, लिएंडर पेस, बाइचुंग भूटिया, नारायण कार्तिकेयन, जीव मिल्खा सिंह और विश्वनाथ आनन्द

किसी युवराज, सचिन या शाहरुख से कम बड़े सतारे नहीं हैं।

खेलों के प्रति रुझान में बढ़ोत्तरी

आर्थिक विकास की दृष्टि से महाशक्तियों में भारत की गणना की जाने लगी है। इसी कारण भारत का खेलों के प्रति रुझान बढ़ा है। यह हिंदुस्तान के लिए अब आवश्यक हो गया है कि विश्व परिदृश्य में एक शक्तिशाली छवि वाले देश के रूप में ओलंपिक खेलों में उसकी महत्ता प्रतिष्ठित हो। इसी कारण सरकारी और निजी स्तर पर लोग खेलों को अधिकाधिक महत्व दे रहे हैं। पदकों और सम्मान के आकर्षण में डूबे इस देश में किसी खिलाड़ी को जब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कामयाबी मिलती है, तो पूरा देश उस पर न्यौछावर हो जाता है। पद, पैसे और प्रतिष्ठा के लिए विजयी खिलाड़ी का सौभाग्य उदय हो जाता है। ओलंपिक की व्यक्तिगत स्पर्धा में पहली बार अभिनव बिंद्रा का पहला स्वर्ण पदक जीतना, उस खिलाड़ी तथा देश दोनों के लिये बड़े सम्मान और गौरव की बात सिद्ध हुई। पूरा देश इस गोल्डन ब्वाय पर फिदा हो गया। पूरे देश की जनता ने अभिनव को सिर–माथे बिठा लिया। राज्य सरकारों ने सम्मान एवं इनामों की झड़ी लगा दी। प्रतिष्ठानों, निजी कार्पोरेट घरानों ने अपनी श्रद्धा प्रकट करने के लिए मानद् पदों से उन्हें नवाजा।

इस विजय से यह विश्वास दृढ़ होता है कि सिर्फ क्रिकेट में ही नहीं, बल्कि खेल की अन्य विधाओं में भी प्रतिभा–पुत्रों के लिए सम्मान, पैसा, नौकरियाँ अब दुर्लभ नहीं रह गईं। सम्मान के प्रभूत अवसर दिखाई देने लगे हैं। खेल के विस्तृत आकाश ने यह नया आलोक फैलाया है और लोगों की सोच तथा अभिवृत्ति को गहराई से प्रभावित किया है।

अतः खेल को अपना कैरियर बनाना असीम संभावनाओं से परिपूर्ण हो गया है। एक बात विशेष उल्लेखनीय यह है कि सारी सुविधाएँ, सम्मान, पदक और पैसे अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर प्रतिष्ठित होने वाले खिलाड़ियों के ही हिस्से में है। समय विश्व आकाश को नयी रश्मियों से आपूरित कर रहा है। भारत खेल की अंतर्राष्ट्रीय उपलब्धियों की ओर बड़ी तेज गति से बढ़ रहा है। वास्तव में खेल उसका है, जो मस्ती और लगन से खेले। खेल को जीवन की मूल्यवान साधना बनाने वाला ही अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकता है, यह एक ध्रुव सत्य है। हर भारतवासी और अपने देश की संस्कृति से प्रेम रखने वाले नागरिक की यह कामना है कि देश हर दृष्टि से समृद्धि और सम्मान को हासिल करे। खेल के लिए सुनहरा भविष्य उपलब्ध हो और खेल की अंतर्राष्ट्रीय विधाओं में भारत के खिलाड़ी बार–बार विजयी और सम्मानित हों।

अध्ययन की आवश्यकता

विकासात्मक अध्ययन की महत्ता असंग्दिग्ध है, किन्तु इसमें भी अन्य पद्धतियों के सामने गुण और दोष स्थित हैं। ऐतिहासिक अनुसंधान तथा नैदानिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में वैयक्तिक अध्ययन की बड़ी उपयोगिता है। ऐतिहासिक अनुसंधान में वैयक्तिक अध्ययन के माध्यम से अनेक शोध कार्य किये गये हैं, लेकिन वे अनुसंधानकर्ता की वैयक्तिक रुचि, संवर्ग तथा मानसिकता से अछूते न रहने के कारण पूर्ण वैज्ञानिक नहीं हैं। नैदानिक मनोविज्ञान के क्षेत्र के अनुसंधानों एवं उसके अध्ययन हेतु यह पद्धति कारगर एवं ठीक मानी जाती है। मनुष्य जीवन के लिए जिस प्रकार समुचित भोजन, आवास, शिक्षा–दीक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति अनिवार्य है, उसी प्रकार उसके सम्यक् सामाजिक, नैतिक एवं आत्मिक उत्थान के लिए व्यक्तिगत रुचियों के अनुसार खेलों की आवश्यकता होती है। मानवीय विकासक्रम में खेलों ने किस तरह की भूमिका का निर्वाह किया है तथा खेलों के स्वरूप किस तरह बदले हैं? उसमें पश्चिमी देशों के वैज्ञानिक द्वारा अध्ययन किये गये हैं, परन्तु भारत में इस प्रकार के अध्ययन का अभी भी अभाव है।

खेलों के संबंध में यद्यपि विपुल रूप से अध्ययन नहीं हुआ है, परन्तु कुछ अध्ययन अवश्य हुए हैं, पर खेलों से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए व्यक्तियों के व्यक्तित्व के अध्ययन का नितान्त अभाव है। इस क्षेत्र में और अधिक तथा अनेक रूपों में अध्ययनों की आवश्यकता अभी भी बनी रहेगी।

अध्ययन–विधि

प्रस्तुत अध्ययन न तो किसी वैज्ञानिक विषय से संबंधित है, जिसमें सुनिश्चित परिणामों पर पहुँचने के लिए प्रयोगों एवं प्रयोगों से प्राप्त निष्कर्षों को आधार बनाया जाता है, न विशुद्ध रूप से समाज–विज्ञान के किसी विषय से संबंधित है, जिसमें अध्ययन के लिए कुछ परिकल्पनाएं सामने रखी जाती हैं। परिकल्पनाओं की जाँच–पड़ताल के लिए विभिन्न विधियों से सामग्री एकत्रित की जाती है। सामग्री की व्याख्या की जाती है। उसका सांख्यिकीय प्रस्तुतिकरण किया जाता है, फिर निष्कर्ष तक पहुँचकर परिकल्पनाओं की सत्यता स्थापित की जाती है। प्रस्तुत अध्ययन इस दृष्टि से सामाजिक विज्ञान से संबंधित अवश्य माना जा सकता है कि इसमें समाज की एक इकाई एक विशिष्ट व्यक्ति के विकास–क्रम का अध्ययन कर, उसके व्यक्तित्व से संबंधित निष्कर्षों तक पहुँचने का उपक्रम किया गया है तथा उसके अवदानों का समूचे समाज के लिए अति उपयोगी क्षेत्र की पृष्ठभूमि में अध्ययन–आंकलन किया गया है। व्यक्तित्व–अध्ययन मनोविज्ञान का एक महत्वपूर्ण विषय है। अतः वह आंशिक रूप से मनोवैज्ञानिक अध्ययन के अंतर्गत आता है। इस दृष्टि से इसमें मनोवैज्ञानिक अध्ययन विधि का उपयोग किया गया है।

जी. डब्ल्यू. अलपोर्ट ने व्यक्तित्व को समझने के लिए अपनी प्रसिद्ध बुक 'पर्सनालिटी–ए–साइकोलाजिकल इंटरप्रिटेशन' में उसके 50 अर्थों की जानकारी दी है तथा निष्कर्षतः उसने अपनी परिभाषा इस प्रकार दी है– "व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोशारीरिक प्रणालिओं का गतिशील संघटन है, जो परिवेश के साथ उसके अनोखे सामंजस्य का निर्धारण करता है।"[5] इस परिभाषा में अलपोर्ट ने व्यक्तित्व में निहित अनोखेपन पर जोर दिया है, परन्तु उसमें निहित सामान्यता की अनदेखी की है।

खेल एवं खेल साहित्य से संबद्ध स्तरीय अध्ययन का अभाव

महत्वपूर्ण तथ्यों को चुनकर अतीत का पुनर्निर्माण करना इतिहास का काम है। इतिहास विकासात्मक अध्ययन का अनिवार्य उपादान है, इसके अभाव में किसी भी विधा का परिपुष्ट विकास–प्रवाह अवरुद्ध हो जाता है और मानव की जिज्ञासा न संतुष्ट होती है न विकसित। खेल का इतिहास भी खेल के अतीत के सुखमय व दुःखमय पक्षों को उद्घाटित करता है।

सत्य बड़ा कठोर होता है, इसकी आँच सहन करना बड़ा कठिन है। कुछ विद्वानों ने बड़ी निष्पक्षता से इस बात को स्वीकार किया है कि भारतीयों में ऐतिहासिक दृष्टि का अभाव था। घटनाओं की प्रस्तुति में उन्हें तिथि–क्रम का महत्त्व अज्ञात था। भारतीय तथ्यों को काल्पनिक एवं पौराणिक कथाओं के परिवेश में रखने के आदी थे। विद्वानों की यह मान्यता है कि भारतीय घटनाओं के तथ्यपरक विवरण से अपरिचित थे। पाश्चात्य विद्वान 'लोयेस डिकिन्सन' ने स्पष्ट किया है कि "हिन्दू इतिहासकार नहीं थे।"[6] भारतीयों में प्रकृति के सामने स्वयं को तुच्छ और असमर्थ मानने की अवधारणा ने भारतीयों को प्रकृति के प्रति पूर्ण समर्पित बना डाला, इससे जीवन की निस्सारता को बल मिला।

प्राचीन भारतीयों ने इतिहास के प्रति विशेष ध्यान नहीं दिया, वे अतीत

तथा वर्तमान की अपेक्षा आगामी जीवन में विशेष रूचि रखते थे। भारतीय आध्यात्मिक चिंतन इतिहास को पानी पर खिंची लकीर समझता है। यह एक अस्तित्वविहीन बोध है। प्रवृत्तिमार्गी विचारकों ने हर घटना में सत्य देखने की कोशिश की है और हर घटनात्मक विवरण से शिक्षा लेने का भाव प्रदर्शित किया है। खेल के प्राचीन इतिहास की गवेषणा तथा विश्लेषण का आधार समय–समय पर घटित घटनाओं की एक सूत्रता बन सकती है।

"इतिहास शब्द की व्युत्पत्ति 'इति+ह+आस' से मानी जाती है। इन तीनों का अर्थ है, निश्चित रूप से ऐसा हुआ था। जर्मन शब्द 'गेस्चेटे' से भी इसकी उत्पत्ति मानी जाती है, इसका अर्थ है विगत घटनाओं का विशेष एवं बोधगम्य विवरण।"[7] आज किसी भी विषय के सम्यक् एवं प्रमाणिक अध्ययन के लिए इतिहास की जानकारी आवश्यक है। अभी तक खेल–इतिहास पर भारतीयों की ठोस दृष्टि नहीं रही है। नवजागरण के पूर्व का भारतीय इतिहास धुंधलकापूर्ण है। खेल पर उसके बहुआयामी इतिहास पर कोई प्रमाणिक कृति का न होना निराशा का संदर्भ है।

विकासात्मक अनुसंधान की वर्तमान में बड़ी महत्ता है, इसके द्वारा वैयक्तिक अध्ययन की प्रामाणिकता सिद्ध होती है। खेल मानव का विकासात्मक इतिहास है। बचपन के खेल अवस्था की वृद्धि के साथ–साथ पीछे छुटते चले जाते हैं। नए खेलों के प्रति मानव का आकर्षण बढ़ता जाता है और जीवन में निरंतर विजय की कामना उसे सतत् जागरूक एवं क्रियाशील बनाये रखती है।

भारतीय इतिहास को प्रमुख रूप से तीन संस्कृतियों ने प्रभावित किया हैदृ (1)हिन्दू, (2)इस्लामी एवं (3) ईसाई।

रामधारी सिंह 'दिनकर' ने "'भारतीय संस्कृति के चार अध्याय' पुस्तक में हिन्दू संस्कृति को दो खण्डों में बाँटा है, इसे आस्तित्क एवं नास्तिक दर्शन भी कहते हैं। ये हिन्दू चिंतन के दो चक्षु है। ये हिन्दू चिंतन की गवेषणा के आधार हैं। व्यक्ति स्वतंत्रता का एक आदर्श रूप हिन्दू धर्म में अधिक दिखाई पड़ता है। भारतीय संस्कृति एक वट–वृक्ष के समान है। इसकी शाखाएं, प्रशाखाएं भी हैं। मधुरता,उदारता एवं सहिष्णुता से हिन्दू धर्म को विस्तार भी मिला और उसकी क्षति भी हुई।"[8] सर्वथा नए धर्म इस्लाम ने हिन्दू धर्म से भयानक संघर्ष किया। हिन्दू उसे आत्मसात नहीं कर पाये। ईसाई धर्मानुयायियों के पास सामरिक महत्त्व के हथियार थे, प्रचुर धन था एवं चातुर्य था। उसने हिन्दू तथा इस्लाम धर्म दोनों का तिरस्कार किया। अंग्रेजों का मुख्य उद्देश्य धन संग्रह था। उसने अपने धर्म का प्रचार बहुत संभाल कर किया, इस्लाम की तरह तलवार का सहारा नहीं लिया। मूलतः भारतीय इतिहास सत्ता प्राप्ति और अपनी संप्रभुता स्थापन का एक संघर्षमय दस्तावेज है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पाण्डेय लक्ष्मीकांत, भारतीय खेल इतिहास का चतुरंग(डॉ. हीरानंद शास्त्रीः अध्यक्षीय भाषण, आल इण्डिया ओरिएन्टेशन कांफ्रेंस, 1965), पृष्ठ संख्या 5.
2. वही, स्व–विचार, पृष्ठ संख्या 6.
3. वही, पृष्ठ संख्या 87–89.
4. पाण्डेय लक्ष्मीकांत, स्मृति आधारित लोकमत.
5. शर्मा आर. पी., सामाजिक अनुसंधान पद्धति, पृष्ठ संख्या 25.
6. पाण्डेय लक्ष्मीकांत, भारतीय खेल इतिहास का चतुरंग(एल. डिकिन्सन : एन एसे ऑन दी सिविलाइजेशन ऑफ इण्डिया, चीन, जापान), पृष्ठ संख्या 5.
7. वही, पृष्ठ संख्या 4.
8. दिनकर रामधारी सिंह, संस्कृति के चार अध्याय, पृष्ठ संख्या 15.